# THE LETTER SUMMARY IN HINDI

ä By Dhumketu

## सारांश

कोचवान अली वृद्ध और रोग-ग्रस्त हैं, परन्तु पिछले पाँच वर्षों से वह लगातार डाकघर जा रहे हैं। बुरे से बुरा मौसम, उनकी गिरती हुई सेहत भी उनको रोक नहीं सकती है। वह प्रतिदिन डाकघर इस आशा से जाते हैं कि एक न एक दिन उन्हें अपनी इकलौती पुत्री, मरियम का पत्र अवश्य मिलेगा। मरियम, एक सैनिक से विवाह करने के बाद, अपने पिता को छोड़ कर चली गई थी।

अली के जीवन का बस एक ही ध्येय था – अपनी पुत्री का पत्र पाना। वह रोज़ सबसे पहले डाकघर पहुँचते हैं और सबसे बाद में जाते हैं, पर अब तक उनके नाम का कोई पत्र नहीं आया। प्रतिदिन वह खाली हाथ, निराश होकर लौटते हैं। डाकघर में सब अली को पागल समझते हें और उन्हें तड़पाने में खुश होते हैं।

अपने समय में कोचवान अली एक सुप्रसिद्ध शिकारी थे और एक अत्यन्त चतुर बन्दूक चालक। जब मरियम उन्हें छोड़कर चली गयी और कभी भी उसके पत्रों का उत्तर नहीं दिया तब अली को जुदाई और उसकी वेदना का आभास हुआ। तब उन्होंने शिकार करना बिल्कुल छोड़ दिया।

एक दिन, जब अली का स्वास्थ्य बहुत खराब था, वह डाकघर बड़ी मुश्किल से पहुँचे। बुरे स्वास्थ्य के कारण वह अधीर हो गये और पोस्टमास्टर से झगड़ा करने लगे। पोस्टमास्टर की अपनी निजी परेशानियाँ थी और वह झुँझलाकर अली को ''चिढ़ पैदा करने वाला'' कह बैठे। अली हतोत्साह और अपमानित तो हुए पर फिर भी उन्होंने आशा का साथ न छोड़ा। जाते समय वह सोने के पाँच सिक्के लक्ष्मीदास नामक एक क्लर्क को दे गये और उनसे यह वचन भी ले लिया कि अगर वह मर गये तो मरियम का पत्र उनकी कब्र तक पहुँचा दिया जाये। अली की यह भविष्यवाणी सत्य निकली क्योंकि बहुत दिनों तक अली दिखाई नहीं दिये।

भाग्य की विडम्बना देखिये। पोस्टमास्टर साहब भी अली के ही जैसी समस्या का सामना कर रहे हैं। उनकी पुत्री बीमार है, दूसरे शहर में है पर उसकी कोई खैर-खबर उन्हें मालूम नहीं है। वह भी उत्सुकता से अपनी पुत्री के पत्र का इंतज़ार कर रहे हैं। अचानक एक दिन उनकी नज़र जब मरियम के पत्र पर पड़ी तो उन्हें उस पत्र का महत्त्व समझ में आया। वह स्वयं अपनी बेटी की जुदाई का दुख सह रहे हैं। वह दूसरे दिन खुद अली को पत्र देने गये। वहाँ जाकर वह चकित रह गये जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि अली का निधन हुए तीन मास बीत चुके हैं। उन्होंने जब अपने क्लर्क लक्ष्मीदास को यह बताया, तब उसने अली के साथ अपनी अन्तिम मुलाकात के बारे में बताया। अपने दुर्व्यवहार से लज्जित होकर वे दोनों अली की कब्र पर गये और वह पत्र उस पर रख दिया।

यह अनुभव पोस्टमास्टर के लिए एक अप्रिय, मानसिक आघात और वेदना देने वाला था। उनको अब यह सत्य स्पष्ट रूप से मालूम हुआ कि पत्र केवल लिफाफे नहीं है बल्कि उनका कुछ मानवीय मूल्य भी होता है। उनका पुत्री-प्रेम की भावना से भरा हुआ हृदय उन्हें अली के प्रति दुर्व्यवहार के लिए धिक्कारता है। अब उन्हें भी अपनी पुत्री के पत्र का इंतजार करना पड़ेगा तथा एक और रात बेचैनी और चिंता में बितानी पड़ेगी।